शोध मंथन Vol. XVI No.4 Oct.- Dec. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.97

# समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्राप्तिः 22.11.25
स्वीकृतः 05.12.25

97

**डॉ. मीरा कुमारी**
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोट्द्वार (उत्तराखंड)
*ईमेलः meera.kumarii733@gmail.com*

**सारांश**

*समकालीन हिन्दी साहित्य का परिदृश्य अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लेकर आज तक स्त्री का प्रश्न निरंतर साहित्य का एक महत्वपूर्ण और जीवंत विषय बना हुआ है। प्रारम्भ में स्त्री केवल समाज और परिवार की भूमिका तक सीमित दिखाई देती थी, किंतु धीरे–धीरे उसने स्वयं को व्यक्त करना आरम्भ किया। यह परिवर्तन केवल बाहरी स्तर पर नहीं था बल्कि आतंरिक मानस में भी हुआ।*

**प्रस्तावना**

कथा साहित्य, विशेषकर कहानी और उपन्यास, स्त्री के आतंरिक जीवन और उसकी मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम बना। पुरुष लेखकों ने भी स्त्री के प्रश्नों को उठाया किंतु नारी मन की सूक्ष्मताओं को नारी लेखिकाओं ने जिस संवेदशीलता और प्रामाणिकताओं के साथ प्रस्तुत किया, वह अद्वितीय है। यदि हम समकालीन कथा लेखिकाओं की रचनाओं को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी दृष्टि केवल नारी की सामाजिक स्थिति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे नारी मन की जटिलताओं, उसकी भावनाओं, इच्छाओं, संघर्षों और आत्मसंघर्षों को भी गहराई से उदघाटित करती हैं। समकालीन कथा लेखिकाओं ने स्त्री की आंतरिक पीड़ा, उसके अवसाद, उसकी संवेगात्मक जटिलताओं आत्मसत्ता की खोज तथा दाम्पत्य, परिवार, समाज और सत्ता के ढाँचों में उसकी अस्मिता के प्रश्न को केंद्र में रखा है।

नारी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि

मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य का आचरण उसकी भावनाओं और उसकी चेतनाओं और उसके भीतरी मानस और अनुभवों से निर्मित होती है। साहित्य विशेषकर कथा साहित्य, नारी के भीतरी मन को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। भारतीय समाज में नारी को लंबे समय तक पराधीन और गौण समझा गया। परिणामस्वरूप उसका आंतरिक जीवन, उसके भाव, उसकी मनोवैज्ञानिक व्यथाएँ साहित्य में अनकहे या अधूरे ढंग से प्रकट होती रही।

समकालीन हिंदी कथा लेखिकाओं ने इसी अधूरेपन को तोड़ा। उन्होंने नारी के अनुभवों को उसकी आत्म दृष्टि से चिंतित किया। अब नारी केवल सहनशील, त्याग्मयी या आदर्श पत्नी या माँ के रूप में चिंतित नहीं की जाती है बल्कि एक संवेदनशील, विचारशील, आकाँक्षी और जटिल मनोभावों के रूप में प्रकट की जाती है। मनोविज्ञान यह मानता है कि मनुष्य के आचरण के पीछे दबी हुई इच्छाएँ, अनकहे द्वंद्व और सामाजिक संरचनाएँ सक्रिय रहती हैं। स्त्री के संदर्भ में यह और भी जटिल हो जाती है क्योंकि उस पर केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और पितृसत्तात्मक दबाव भी सक्रिय रहते हैं। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा और चित्रा मुद्रल जैसी लेखिकाओं ने पहली बार स्त्री–मन की इस गुत्थी को साहित्य में स्वर दिया।

**समकालीन कथा लेखिकाएँ और नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण**

समकालीन कथा–लेखन में मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्रल, मैत्रेयी पुष्पा, नीलिमा चौहान, गीतांजलि श्री, और मनीषा कुलश्रेष्ठ जैसी लेखिकाओं का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। इन लेखिकाओं ने स्त्री की चेतना और उसके मानस को विविध आयामों में उद्घाटित किया।

**मन्नू भंडारीः–** मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बेटी' विवाह–विच्छेद की त्रासदी और टूटते परिवार की पीड़ा का गहन चित्रण करता है। यहाँ केवल पति–पत्नी का ही संघर्ष नहीं, बल्कि बच्चे 'बंटी' का मानसिक द्वंद्व भी केंद्र में है। यह उपन्यास दिखाता है कि दांपत्य की दरारें केवल सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि गहरे मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती है।

उनकी कहानियों में भी स्त्री की अस्मिता, आत्मसम्मान और आत्मपहचान की तलाश बार–बार सामने आती है।

**कृष्ण सोबतीः–** कृष्णा सोबती का उपन्यास 'मित्रो मरजानी' स्त्री की यौनिकता और उसकी आकांक्षाओं का निर्भीक उद्घाटन है। मित्रों का चरित्र उस स्त्री का प्रतीक है जो अपने मन की इच्छाओं को दबाने से इनकार करती है। यह उस समय की सामाजिक संरचना को चुनौती थी, जब स्त्री से केवल मौन और सहनशीलता की अपेक्षा की जाती थी।

उनका डार से बिछुड़ी स्त्री की जड़ों और विस्थापन के मानस का अद्भुत चित्रण है।

**मृदुला गर्गः–** मृदुला गर्ग के उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' में स्त्री की मानसिक बेड़ियों और आत्ममुक्ति की खोज को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। 'चितकोबरा' में स्त्री का आत्मविश्लेषण और यौनिकता का बेबाक चित्रण है।

मृदुला गर्ग की नायिकाएँ अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती हैं, भले ही इसका अर्थ समाज से टकराना क्यों न हो।

**चित्रा मुद्रलः–** चित्रा मुद्रल का उपन्यास आवाँ स्त्री के राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का जीवंत दस्तावेज़ है। इसमें स्त्री–मन केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि वैचारिक भी है। उसकी नायिकाएँ सामाजिक आंदोलन से जुड़ी है और उनके मानस में विद्रोह और जिम्मेदारी दोनों उपस्थित है।

**मैत्रेयी पुष्पाः–** मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण स्त्री के जीवन और मानस को अपनी रचनाओं में स्वर दिया। 'इनन्नमम और अल्मा कबूतरी' में उनकी नायिकाएँ परंपरा और बंधनों को तोड़ती है। उनकी स्त्रियाँ विद्रोही हैं, वे अपने मानसिक दमन को अस्वीकार करती हैं।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.97

**गीतांजलि श्रीः–** गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' मातृत्व, स्मृति और पारिवारिक संबंधों के जटिल मनोविज्ञान को प्रस्तुत करता है। हमारा शहर उस बरस में साम्प्रदायिक दंगों के बीच स्त्री के मन की भयावह स्थिति चित्रित होती है। गीतांजलि श्री की भाषा और शैली स्त्री–मन की टूटी हुई, विखंडित और प्रवाही संरचना को पकड़ती है।

**मनीषा कुलश्रेष्ठः–** 'शिगाफ और शिगारु' जैसे उपन्यासों में प्रवासी स्त्री के मानस की जटिलता उभरकर आती है। स्मृति, विस्थापन और आत्मविस्मृति की स्थितियाँ यहाँ गहराई से चित्रित है।

**उषा प्रियंवदाः–** 'रुकोगी नहीं राधिका' और 'पचपन खंभे लाल दीवारें' जैसी कृतियाँ कामकाजी स्त्रियों की मनोवैज्ञानिक उलझनों का चित्रण करती हैं। यहाँ स्त्री आत्मसम्मान और प्रेम के बीच द्वंद्व से गुजरती है।

**नासिरा शर्माः–** 'ठीकरे की मँगनी' और 'पारिजात' में मुस्लिम समाज की स्त्रियों का मानस चित्रित है। वे परंपरागत बंधनों और आधुनिक चेतना के बीच संघर्षरत हैं। नासिरा शर्मा ने स्त्री–मन की बहुआयामी स्थिति को अत्यंत संवेदनशीलता से उकेरा।

**प्रभा खेतानः–** 'छिन्नमस्ता' और 'अन्या से अनन्या' में स्त्री–देह और स्त्री–मन का गहन द्वंद्व मिलता है। प्रभा खेतान ने यह दिखाया कि स्त्री का शरीर केवल उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि उसकी आत्मा और अनुभव का केंद्र है।

**ममता कालियाः–** 'बघेर' और 'नारी निकेतन' में मध्यमवर्गीय स्त्रियों के जीवन की विडंबनाएँ हैं। ममता कालिया की नायिकाएँ अपनी हँसी और व्यंग्य की पीछे गहरे मानसिक दर्द छिपाती हैं। उनका साहित्य स्त्री–मन की द्वंद्वात्मकता का सशक्त प्रमाण है।

**मंजुल भगतः–** 'गिरफ्त' और 'पार उतरना' जैसी रचनाएँ शहरी स्त्री के जीवन और उसके मानसिक द्वंद्व का सशक्त चित्रण करती है। उनकी स्त्रियाँ अस्तित्व की तलाश में भटकती हैं और समाज की विसंगतियों से टकराती है।

**नारी–मन की जटिलताएँ और आत्मसंघर्ष**

नारी के मनोविज्ञान का सबसे बड़ा पहलू उसका आत्मसंघर्ष है। एक ओर वह परंपराओं और सामाजिक अपेक्षाओं से बँधी है, दूसरी ओर उसकी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ और आत्मसत्ता की खोज उसे इन बंधनों से मुक्त होना चाहती है।

- **आत्मपहचान की खोज–** स्त्री के मानस में सबसे बड़ा प्रश्न हैः ''मैं कौन हूँ?'' यह प्रश्न उसे आत्ममंथन की ओर ले जाता है।
- **दांपत्य और मानसिक तनाव–** विवाह संस्था में स्त्री की स्थिति, उसका दमन और उससे उत्पन्न मानसिक तनाव कथा–लेखिकाओं की रचनाओं का केंद्रीय बिंदु है।
- **यौनिकता का प्रश्न–** स्त्री की कामनाएँ और उसकी देह के अनुभव पहले साहित्य में वर्जित रहे, पर समकालीन लेखिकाओं ने इसे निडर होकर प्रस्तुत किया।
- **एकाकीपन और अवसाद–** समाज और परिवार से अलग–थलग पड़ने वाली स्त्रियाँ गहरे मानसिक अवसाद से गुजरती हैं। यह अवसाद उनकी कहानियों और उपन्यासों में मार्मिक रूप से झलकता है।

**तुलनात्मक दृष्टिः हिन्दी और विश्व साहित्य**

हिन्दी की इन लेखिकाओं की तुलना यदि पश्चिमी लेखिकाओं से की जाए तो अनेक समानताएँ उभरती हैं। उदाहरणस्वरूप, सिमोन द बोउवार ने 'द सेकंड सेक्स' में कहा कि स्त्री जन्म से नहीं, बल्कि समाज द्वारा 'स्त्री' बनाई जाती हैं। यही बात कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग के लेखन में भी प्रतिध्वनित होती है, जहाँ स्त्री अपने भीतर दबी इच्छाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संघर्ष करती दिखाई देती है।

इसी प्रकार वर्जीनिया वूल्फ ने 'अ रूम ऑफ वन स ओन' में स्त्री के लिए स्वतंत्र मानसिक और भौतिक स्थान की आवश्यकता पर बल दिया। उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी की नायिकाएँ इसी स्वतंत्रता की खोज में मानसिक द्वंद्व से गुजरती है।

इस तुलनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी कथा–लेखिकाओं ने केवल भारतीय स्त्री के मानस को ही नहीं, बल्कि सार्वभौमिक स्त्री–मन की जटिलताओं को भी साहित्य में अभिव्यक्त किया है।

**भविष्य की संभावनाएँ**

समकालीन दौर में स्त्री का मानस और भी जटिल होता जा रहा है। वैश्वीकरण, प्रवासी जीवन, सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल संस्कृति ने स्त्री के जीवन में नए अवसर और चुनौतियाँ दोनों उत्पन्न किए हैं। मनीषा कुलश्रेष्ठ जैसे लेखकों ने प्रवासी स्त्री की मानसिक स्थिति का चित्रण करते हुए यह दिखाया है कि विस्थापन और स्मृति किस प्रकार स्त्री की मनोवैज्ञानिक संरचना को बदलते हैं।

भविष्य में हिन्दी कथा–साहित्य में निम्नलिखित बिंदुओं पर अधिक बल दिए जाने की संभावना है–

1. **डिजिटल युग की स्त्री–** इंटरनेट, सोशल मीडिया और आभासी रिश्तों से जुड़ी मानसिक अवस्थाएँ।
2. **एलजीबीटीक्यू+ स्त्री पात्र–** समलैंगिकता और जेंडर पहचान से जुड़े मनोवैज्ञानिक पहलू।
3. **वैश्विक प्रवास और अंतर–सांस्कृतिक मानस–** विदेश में रह रही भारतीय स्त्रियों की मानसिक स्थितियाँ।
4. **कामकाजी स्त्री का तनाव–** दोहरी भूमिकाओं (घर और दफ्तर) से उपजा मानसिक दबाव।
5. **पर्यावरण और स्त्री–** पारिस्थितिकी संकटों से जुड़ी स्त्री–मानसिकता का साहित्यिक चित्रण।

**समाज और स्त्री का मानस**

स्त्री का मानस केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना का भी परिणाम है। पितृसत्ता, धर्म और परंपराएँ उसके अवचेतन में अपराधबोध और हीनता भर देती है। समकालीन कथा–लेखिकाएँ दिखाती हैं कि यह मानसिक जाल कैसे टूट सकता है और स्त्री अपने मानस को कैसे मुक्त कर सकती है।

**निष्कर्ष**

समकालीन हिन्दी कथा–लेखिकाओं ने स्त्री के मानस को साहित्यिक विमर्श का केंद्र बनाया है। उनके लेखन से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री केवल सामाजिक–आर्थिक संरचनाओं की शिकार नहीं, बल्कि एक जटिल मनोवैज्ञानिक सत्ता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.97

- मन्नू भंडारी और उषा प्रियंवदा ने मध्यमवर्गीय शहरी स्त्रियों के मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत किया।
- कृष्णा सोबती और प्रभा खेतान ने स्त्री की इच्छाओं, यौनिकता और अस्मिता के प्रश्नों को निर्भीकता से सामने रखा।
- चित्रा मुद्गल और मैत्रेयी पुष्पा ने श्रमिक और ग्रामीण स्त्रियों के मानस का यथार्थवादी चित्रण किया।
- गीतांजलि श्री और मनीषा कुलश्रेष्ठ ने विस्थापन, स्मृति और प्रवासी जीवन के मनोवैज्ञानिक पक्ष को उभारा।
- ममता कालिया और मंजुल भगत ने मध्यमवर्गीय स्त्रियों की हँसी और व्यंग्य के पीछे छिपी मनोवैज्ञानिक पीड़ा को उजागर किया।

इस प्रकार, समकालीन हिन्दी कथा–लेखिकाओं ने स्त्री के मानस की उन गहराइयों तक पहुँचा है, जहाँ पहले साहित्य शायद ही कभी गया हो। उनके लेखन ने न केवल स्त्री–साहित्य की परिधि को विस्तृत किया, बल्कि हिन्दी साहित्य को एक नई संवेदनशीलता भी प्रदान की है।

**संदर्भ**

1. मन्नू भंडारी– ''आपका बंटी'', राजकमल प्रकाशन, 1971
2. कृष्णा सोबती, ''मित्रो मरजानी'', राजकमल प्रकाशन, 1966
3. मृदुला गर्ग, ''उसके हिस्से की धूप'', राजकमल प्रकाशन, 1975
4. चित्रा मुद्गल, ''आवाँ'', वाणी प्रकाशन, 1999
5. मैत्रेयी पुष्पा, ''इदन्नमम'' राजकमल प्रकाशन, 1998
6. गीतांजलि श्री, ''माई'', राजकमल प्रकाशन, 1993
7. मनीषा कुलश्रेष्ठ, ''शिगाफ'', राजकमल प्रकाशन, 2014
8. उषा प्रियंवदाज, ''रुकेगी नहीं राधिका'', वाणी प्रकाशन, 1969
9. नासिरा शर्मा, ''ठीकरे की मँगनी'', राजकमल प्रकाशन, 1980
10. प्रभा खेतना, ''छिन्नमस्ता'', वाणी प्रकाशन, 1995
11. ममता कालिया, ''बेघर'', राजकमल प्रकाशन, 1991
12. मंजुल भगत, ''गिरफ्त'', वाणी प्रकाशन, 2005